ज्ञानदर्शन एवं ज्ञानवाणी की शिक्षण प्रभावशीलता

*सुरेन्द्र कुमार तिवारी**

छात्र-छात्राओं को सरल, सुलभ तथा सहज रूप से शिक्षा देकर उनमें तकनीकी का प्रयोग करते हुए आधुनिक शिक्षा देना मुख्य उद्देश्य है। हमारे देश की भौगोलिक परिस्थितियाँ, कुशल व योग्य शिक्षकों का अभाव शालाओं में पर्याप्त शिक्षण नहीं दें पाता, इसी तारतम्य में देश के प्रत्येक नागरिक तक गुणात्मक शिक्षा पहुँचाने हेतु ज्ञानदर्शन एवं ज्ञानवाणी आदि शैक्षिक चैनलों की शुरूआत शिक्षा के क्षेत्र में अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो रही है। उपग्रह आधारित संचार प्रौद्योगिकी का सबसे बड़ा लाभ उसकी पहुँच है अर्थात् यह देश के किसी भी कोने तक पहुँच सकता है। यह दूरस्थ क्षेत्रों में पृथक-पृथक रहने वाले लोगों तक एक समय में पहुँच सकता है, अपने दृश्य व श्रव्य माध्यम से अंतः क्रियात्मक तथा गुणात्मक शिक्षा की माँग पूरी करने में ज्ञानदर्शन एवं ज्ञानवाणी काफी मद्दगार साबित हो सकता है।

रविंद्रनाथ टैगोर ने कहा था–''शिक्षा ईंट और चूने से बने मकान की भाँति नहीं है, जिसका नक्शा मिस्त्री पहले से ही तैयार कर सकता है। शिक्षा तो वृक्ष की भाँति है, जो अपने जीवन की लय के साथ ताल मिलाकर और उसके अनुरूप विकसित होती है।''

शिक्षा किसी भी देश की समृद्धि और शक्ति का सशक्त आधार एवं राष्ट्रीय विकास का मापदण्ड है। शिक्षा के साथ-साथ राष्ट्रीय विकास का सीधा संबंध उस देश की सूचना शैक्षिक प्रौद्योगिकी अभिकरणों से होता है।

वर्तमान में देश में हर व्यक्ति को शिक्षित करने का लक्ष्य औपचारिक शिक्षा पद्धति को अपनाकर पूरा करना कठिन है। अनौपचारिक शिक्षा और दूर शिक्षा के जरिए शिक्षा का विस्तार तेजी से हो सकता है। देश के ग्रामीण और दुर्गम क्षेत्रों तक शिक्षा के फैलाव में ज्ञानदर्शन एवं ज्ञानवाणी एफ. एम. रेडियो केंद्र वर्तमान में प्रमुख शैक्षिक कार्यक्रम निर्माता ऐजेंसी के रूप में कार्य कर रहे हैं।

ज्ञानदर्शन एवं ज्ञानवाणी शैक्षिक प्रसारण का उद्‌भव एवं विकास

ज्ञानदर्शन शिक्षा के लिए सस्ता और सर्वसुलभ दृश्य-श्रव्य माध्यम है। ज्ञानदर्शन का विधिवत् रूप से उद्‌घाटन 26 जनवरी 2000 को हुआ तथा दूरदर्शन द्वारा इसके उपग्रह प्रसारण की सुविधा सुलभ कराई गई। ज्ञानदर्शन को केवल उपग्रह आधारित केबिल, टी.वी. व्यवस्था के माध्यम से ही प्राप्त किया जा सकता है। जून 2000 से ज्ञानदर्शन पर प्रतिदिन 24 घंटे शैक्षिक कार्यक्रमों का प्रसारण आरंभ हो गया। ज्ञानदर्शन पर अनेक अंतर्क्रियात्मक कार्यक्रमों का भी प्रसारण आरंभ किया गया जिसमें छात्र अथवा दर्शक सीधे स्टूडियों में बैठे विशेषज्ञ से टेलीफोन, फैक्स अथवा इंटरनेट के माध्यम से विचारों का आदान-प्रदान कर सकते हैं। ज्ञानदर्शन शैक्षिक टी.वी. चैनल का प्रारंभ छात्रों को अध्ययन में अधिकाधिक सहायता पहुँचाने के लिए किया गया है। ज्ञानदर्शन के उद्‌भव में मानव संसाधन विकास मंत्रालय तथा इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू) द्वारा विशेषकर उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् छात्रों हेतु शिक्षा की सहायक प्रणाली विकसित करने के विचार का साकार होना है। वर्तमान में ज्ञानदर्शन पर करीब चौबीस घंटे प्रसारण होता है। ज्ञानदर्शन द्वारा छात्रों हेतु अंतर्क्रियात्मक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया जाता है। ज्ञानदर्शन के माध्यम से विभिन्न वर्गों के छात्रों हेतु समस्त विषयों पर आधारित कार्यक्रमों का प्रसारण किया जाता है। इन कार्यक्रमों में प्राथमिक विद्यालयों, माध्यमिक विद्यालयों, उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों व उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् छात्रों हेतु विभिन्न प्रकार के शैक्षिक कार्यक्रम होते हैं। इसके अतिरिक्त शिक्षकों हेतु कार्यक्रम, प्रौढ़ शिक्षा पर कार्यक्रम, दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम, कृषि आधारित कार्यक्रम तथा कंप्यूटर शिक्षा के कार्यक्रमों का प्रसारण किया जाता है।

प्रसार भारती के प्रयासों से शिक्षा के क्षेत्र में ज्ञानवाणी के नाम से एफ. एम. केंद्र की स्थापना की गई है। ज्ञानवाणी का शुभारंभ 2001 में किया गया। ज्ञानवाणी प्रसारण को आरंभ कराने में इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू), एन. सी.ई.आर.टी. व यू.जी.सी. का विशेष योगदान रहा। वर्तमान में ज्ञानवाणी नेटवर्क का देशभर में चालीस रेडियो केंद्र के माध्यम से प्रसारण किया जा रहा है। इनमें चार मेट्रों केंद्र दिल्ली, मुंबई, कोलकाता और चेन्नई हैं। ज्ञानवाणी के प्रत्येक प्रसारण केंद्र द्वारा 60 कि.मी. के दायरे में कार्यक्रमों को पहुँचाया जा सकता है। अतः संबंधित नगर तथा आसपास के क्षेत्रों में ज्ञानवाणी पर प्रसारित शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति व शैक्षिक समस्याओं का निराकरण किया जा सकता है।

ज्ञानदर्शन एवं ज्ञानवाणी एक शैक्षिक दृश्य-श्रव्य माध्यम

ज्ञानदर्शन एवं ज्ञानवाणी केंद्र के माध्यम से विभिन्न वर्गों हेतु शैक्षिक कार्यक्रमों में प्राथमिक एवं माध्यमिक कक्षाओं हेतु कार्यक्रम, उच्चतर माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा पर आधारित कार्यक्रम, प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम, तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम,

**प्राचार्य*, उमिया कन्या शिक्षा महाविद्यालय, मण्डलेश्वर, जिला-खरगोन(म.प्र.)

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम, कृषि, पर्यावरण, स्वास्थ्य तथा सूचना प्रौद्योगिकी आधारित कार्यक्रमों का प्रसारण प्रमुख रूप से किया जाता है।

इस प्रकार ज्ञानदर्शन एवं ज्ञानवाणी एफ.एम. रेडियो केंद्र से प्रसारित होने वाले विभिन्न कार्यक्रम अपने लक्ष्य समूह में जीवन संबंधी महत्वपूर्ण बातों जैसे– रोजगार, स्वास्थ्य, शिक्षा, व्यवसाय तथा अनेक ज्ञानवर्धक सूचनाओं आदि को शामिल कर बालक-बालिकाओं को मानसिक विकास के साथ-साथ राष्ट्रीय विकास में भी भागीदारी निभाने के लिए प्रेरित करता है।

शिक्षा शास्त्रियों का मानना है कि शिक्षा का अभाव आर्थिक विषमता, क्षेत्रीय असंतुलन और सामाजिक अन्याय को बढ़ावा देता है। यही कारण है कि कोठारी कमीशन (1964) ने शिक्षा को ''शांतिपूर्ण सामाजिक परिवर्तन का प्रमुख औज़ार'' निरूपित किया। भूमंडलीकरण की प्रक्रिया ने शिक्षा और उसकी पद्धतियों में बदलाव की आवश्यकता तेज की है। जनसंचार विशेषज्ञों का मानना है कि अच्छी शिक्षा के साधनों की माँग और उनकी पूर्ति के बीच जो भारी अंतर है, उसे कम करने में आकाशवाणी और ज्ञानवाणी एफ. एम. रेडियो नेटवर्क जैसे माध्यम प्रभावी भूमिका अदा कर सकते हैं। ज्ञानदर्शन एवं ज्ञानवाणी से प्रसारित शैक्षिक कार्यक्रम बालक बालिकाओं पर निम्न प्रभाव डालने में सहायक सिद्ध हो सकते है–

- कल्पनामय सोच के लिए आधार तैयार करते है।
- वे बालक-बालिकाओं में विषय के प्रति रूझान पैदा करने में सहायक होते है।
- वे सीखने की प्रक्रिया को स्थायी बनाते है।
- वे आत्मप्रेरित सक्रियता की प्रवृत्ति विकसित करते है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में इस बात पर बल दिया गया है कि शिक्षा के व्यापक प्रसार के लिए शैक्षिक प्रौद्योगिकी के विविध साधनों का उपयोग किया जाना चाहिए। अत: ज्ञानदर्शन एवं ज्ञानवाणी एफ. एम. रेडियो से प्रसारित कार्यक्रमों का बालक-बालिकाओं के मानसिक एवं शैक्षिक विकास में चार तरह से प्रचार हो सकता है–

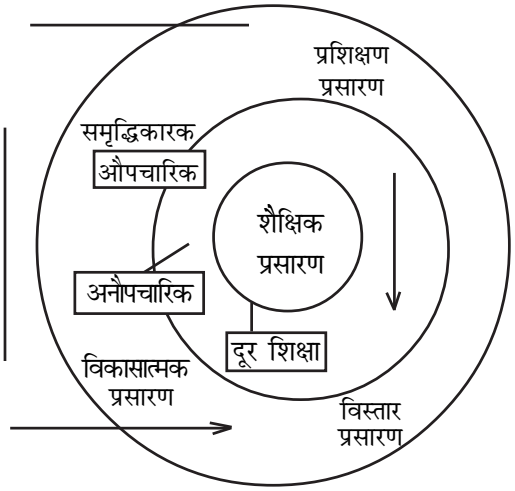

ज्ञानदर्शन एवं ज्ञानवाणी केंद्र से प्रसारित शैक्षिक प्रसारण से बालक-बालिकाओं के मानसिक विकास पर पड़ने वाले प्रभाव का चित्रण निरूपण।

1. समृद्धिकारक प्रसारण

जिससे कक्षा में पढ़ाए जा रहे विषयों में गुणात्मक सुधार लाया जा सकें। अधिकाँश बालक-बालिकाओं को देश के उत्कृष्ट शिक्षकों की सेवाओं का लाभ ज्ञानदर्शन एवं ज्ञानवाणी प्रसारण के माध्यम से मिल सकता है।

2. प्रशिक्षण प्रसारण

शिक्षकों की योग्यता एवं प्रशिक्षण में वृद्धि के लिए ज्ञानदर्शन एवं ज्ञानवाणी से विशेष कार्यक्रम प्रसारित किए जा सकते हैं जिससे शिक्षकों को प्रशिक्षित कर अप्रत्यक्ष रूप से बालक बालिकाओं को नवाचार शिक्षण विधि द्वारा शिक्षित किया जा सकता है।

3. विकासात्मक प्रसारण

अनौपचारिक शिक्षा के लिए ज्ञानदर्शन एवं ज्ञानवाणी सशक्त माध्यम है। इसके माध्यम से बालक-बालिकाओं के संप्रेषण कौशल में विस्तार और व्यक्तित्व विकास के साथ-साथ परिर्वतन को स्वीकारने की प्रेरणा भी दी जा सकती है। परिवर्तन ही देश के समग्र विकास में सहायक है।

4. विस्तार प्रसारण

ज्ञानदर्शन एवं ज्ञानवाणी केंद्र से प्रसारित कार्यक्रमों से शिक्षा से विरत्-बालक बालिकाओं एवं लोगों को शिक्षा प्राप्त करने की प्रेरणा भी दे सकता है। औपचारिक, अनौपचारिक और दूर शिक्षा की आवश्यकता महत्व और लाभ आदि पर प्रसारण कर लोगों को प्रोत्साहित किया जा सकता है।

ज्ञानदर्शन एवं ज्ञानवाणी की शिक्षण प्रभावशीलनता

वैज्ञानिक माहौल तैयार करना हमारी आज की आवश्यकता है। ज्ञानदर्शन एवं ज्ञानवाणी इसमें हमारी मदद कर सकता है। स्कूल व कॉलेजों में विज्ञान की शिक्षा से कहीं अधिक हमें जरूरत है वैज्ञानिक माहौल उत्पन्न करने की तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के प्रारूप की शुरूआत करने की ताकि लोग आधुनिक प्रौद्योगिकी संसार को अपना सकें। रेडियो ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में लोगों के अपार समूह पर अपना प्रभाव डाल सकता है। अत: वैज्ञानिक माहौल बनाने में इसकी मदद की जा सकती है।

वर्तमान में ज्ञानदर्शन एवं ज्ञानवाणी सूचना एवं शैक्षिक प्रोद्योगिकी का सबसे सस्ता माध्यम है अत: इसे ग्रामीण एवं दूरदराज के क्षेत्रों में सर्वसुलभ बनाकर शैक्षिक कार्यक्रमों को मानक हिंदी भाषा में प्रसारित कर भाषा संप्रेषण कौशल विकसित करने से बालक-बालिकाओं के मानसिक विकास में सकारात्मक कल्पनाशीलता विकसित की जा सकती है। रेडियो का संप्रेषण ध्वनि, संगीत, संवाद, खामोशी के रचनात्मक मिश्रण से अपने श्रोताओं का किसी घटना के साथ संबंध स्थापित करा सकता है। साथ ही पर्यावरण,स्वच्छता, सामाजिक व सांस्कृतिक मूल्यों का बोध कराकर इसे मानसिक परिवर्तन के प्रमुख साधन के रूप में विकसित किया जा सकता है। सूचना, शिक्षा, मनोरंजन और समाज के अंत: संबंधों को समझने का भी यह एक सशक्त माध्यम बन सकता है। वर्तमान में सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय से इजाजत प्राप्त कर गाँव की पंचायत, विद्यालय, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय समाजहित और छात्रहित के कार्यक्रम अपने रेडियो-स्टेशन लगाकर प्रसारित कर सकते हैं जो बालक-बालिकाओं के मानसिक विकास के साथ-साथ सामाजिक, संवेगात्मक एवं शारीरिक विकास में सहायक सिद्ध हो सकता है।

इस प्रकार बालक-बालिकाओं के शैक्षिक एवं मानसिक विकास के उन्नयन में ज्ञानदर्शन एवं ज्ञानवाणी से प्रसारित कार्यक्रम वर्तमान में वरदान साबित हो सकते हैं।

संदर्भ

गुप्त, ब्रजमोहन. *जनसंचार : विविध आयाम*, राधोष्ण न प्रकाशन, नई दिल्ली

डॉ. सत्यकाम. 2003. *रेडियो और शिक्षा.* इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय मानविकी विद्यापीठ, नई दिल्ली

मूर्ति, डॉ. जेम्स ए. 2003, *रेडियो माध्यम से परिचय*, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय मानविकी विद्यापीठ, नई दिल्ली

गंगाधर, मधुकर, *रेडिया लेखन*, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना